Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

भूगोल नोट्स

- ब्रह्माण्ड एवं सौर परिवार
- राजस्थान की जलवायु
- राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति
- राजस्थान में वन्य जीव एवं अभ्यारण्य
- भारत में मानसून की उत्पत्ति तथा क्रियाविधि के सिद्धांत
- भारत की जलवायु
- भारत की प्राकृतिक वनस्पति एवं मिट्टियां
- भारत में वर्षा का वितरण
- राष्ट्रीय वन नीति
- भारत में वन्य जीव
- प्रकृति के महत्वपूर्ण दिवस

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

ब्रह्माण्ड एवं सौर परिवार

ब्रह्माण्ड

➡ आधुनिक भूगोल के पिता *अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट* व *रिटर* को कहा जाता है ।
➡ *भूगोल* शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान *इरेटोस्थेनिज* ने किया ।
➡ परन्तु भूगोल पर सबसे अधिक कार्य करने वाला भूगोलवेत्ता *हिकेटियस* था ।
➡ *भूगोल का पिता हिकेटियस* को कहते है ।
➡ *भारत* में दिखने वाले *सात तारो के समूह* को *सप्तर्षि मंडल* के नाम से जाना जाता है।
➡ *ग्रीक ग्रन्थों* के अनुसार इनके नाम - *अल्का , बीटा , गामा , डेल्टा , एटा , एपिसिलोन व जेंटा* है ।
➡ *फ्रांस* में इसे *सॉसपैन (हत्थे वाली ढेगची) , ब्रिटेन* में इसे *खेत जुताई वाला हल (Plaugh)* , और *यूनान* में इसे *स्मल बियर* के नाम से जाना जाता है ।
➡ *सप्तर्षि* जो *अर्सा मेजर या ग्रेट बीयर* का भाग है।
➡ *ध्रुव तारे* से *उत्तर दिशा* का निर्धारण किया जाता है।
➡ *लाखो तारो का विशाल समूह 'आकाशगंगा '* का निर्माण करता है।
➡ *असंख्य आकाशगंगाओ के समूह को ' ब्रह्माण्ड '*कहते है ।
➡ *तारो के छोटे समूह को ' नक्षत्रमंडल '* कहते है ।
➡ *खगोलीय पिंडो* के बीच की *दुरी मापने* के लिए *प्रकाश वर्ष* का उपयोग होता है ।
➡ *प्रकाश वर्ष ' दूरी '* का मात्रक है।
➡ एक वर्ष की अवधि में प्रकाश *तीन लाख किमी प्रति सेकण्ड* की गति से जितनी दूरी तक जा सकता है , उसी दूरी को एक *' प्रकाश वर्ष '* कहा जाता है ।
➡ ब्रह्माण्ड का सर्वमान्य सिद्धांत *महाविस्फोटक सिद्धांत* या *बिग - बैंग सिद्धान्त* है ।
➡ *पृथ्वी सहित सौर परिवार ' मन्दाकिनी या ऐरावत पथ '* नामक आकाशगंगा में स्थित है ।
➡ *सर्वाधिक आकर्षक एवं निराला* तारा *पुच्छल तारा या धूमकेतु* है जो *बर्फ , धूल , छोरी चट्टानों और गैंसीय* पदार्थो से बना है ।
➡ धूमकेतु का *सिर* हमेशा *सूर्य की तरफ* एवं *पूँछ* विपरीत दिशा में होती है।
➡ धूमकेतु के चमकीले शीर्ष को *कोमा (coma)*तथा पूंछ को *टेल (Tail)*कहते है ।

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

➡ *सबसे चर्चित पुच्छल तारा " हैली "* है जो *76*वर्ष बाद दिखाई देता है। इसे अंतिम बार *1986* में देखा गया था अब यह पुनः *2062* में दिखाई देगा।
➡ सबसे बड़ी आकाश गंगा *ऐरोमिडा* है।
➡ सबसे छोटी आकाश गंगा *आस्ट्रेसिस* है ।
➡ आकाश गंगा का आकार *सर्पिलाकार* है ।
➡ हमारी पृथ्वी जिस आकाश गंगा में विद्यमान है , उसे *दुग्ध मेखला / मन्दाकिनी / ऐरावतपथ* कहा जाता है ।

सौरमंडल

➡ सौरमंडल की खोज *निकोलस कोपरनिकस* ने की ।
➡ सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में लगभग *8 मिनट 30 सेकण्ड* का समय लगता है।
➡ सौर परिवार में कुल *8 ग्रह* है ।
➡ *ग्रहों का सूर्य की दूरी के अनुसार क्रम: बुध (Mercury) , शुक्र (Venus) , पृथ्वी (Earth) , मंगल (मार्स) , बृहस्पति (Jupiter) , शनि (Saturn) , अरुण (Uranus) , वरुण (Neptune)* है ।
➡ सबसे चमकीला तारा *साइरस / Dog Star* है ।
- *टेलिस्कोप का आविष्कार गैलीलियो* ने 17 जनवरी 1610 ई में किया ।
- *कैपलर ने ग्रहों की गति का सिद्धांत* दिया था ।

सूर्य

➡ सूर्य में *हाइड्रोजन 71% , हीलियम 26.5%* पाई जाती है ।
➡ *हाइड्रोजन को भविष्य का ईंधन* कहा जाता है ।
➡ सूर्य का केंद्रीय भाग *क्रोड / (Core)* कहलाता है ।
➡ सूर्य की दीप्तिमान सतही वाले भाग को *प्रकाशमंडल* कहा जाता है ।
➡ ऊपर की सतह को *वर्णमण्डल* कहते है ।
➡ इसकी सतह पर जो काले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं , उन्हें *सूर्य कलंक / सौर कलंक* कहा जाता है ।

आन्तरिक / अवान्तर / धरातलीय ग्रह

बुध , शुक्र , पृथ्वी , मंगल ग्रह कहलाते है।

➡ *आंतरिक या धरातलीय ग्रह छोटे और अधिक घनत्व* वाले है और इनका निर्माण *चट्टानों* से हुआ है ।

विशेषताएं

1 *बुध : - सूर्य की परिक्रमा - 88 दिन में*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 59 दिन में
: - उपग्रह की संख्या - 0

2 *शुक्र : - सूर्य की एक परिक्रमा - 225 दिन में*
: - अपने अक्ष और घुर्णन - 243 दिन में
: - उपग्रह की संख्या - 0

3 *पृथ्वी : - सूर्य की एक परिक्रमा - 365 दिन 6 घंटे में*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 01 दिन में
: -उपग्रह की संख्या - 01 (चंद्रमा)

4 *मंगल : - सूर्य की एक परिक्रमा - 687 दिन में*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 01 दिन में
: - उपग्रह की संख्या - 02

बाहरी / पार्थिव ग्रह

बृहस्पति , शनि , अरुण , वरुण कहलाते है । (जो ग्रह *आकार में बड़े* होने के कारण *' ग्रेट प्लेनेटस '* कहलाते है)

➡ *बाह्य ग्रह बड़े एवं कम घनत्व* वाले है , इनका निर्माण *गैस और तरल पदार्थों* से हुआ है ।

विशेषताएं

1 *बृहस्पति : - सूर्य की एक परिक्रमा - 11 वर्ष 11 माह में*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 09 घंटे , 56 मिनट में
: - उपग्रह की संख्या -16

2 *शनि : - सूर्य की एक परिक्रमा - 29 वर्ष , 5 माह में*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 10 घंटे 40 मिनट में
: - उपग्रह की संख्या - 18

3 *अरुण : -सूर्य की एक परिक्रमा- 84 वर्ष मे*
: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 17 घंटे 14 मिनट में

: - उपग्रह की संख्या - 17

4 *वरुण : - सूर्य की एक परिक्रमा - 164 वर्ष में*

: - अपने अक्ष पर घुर्णन - 16 घंटे 7 मिनटमें

: - उपग्रह की संख्या - 08

➡ *शुक्र व अरुण ग्रह पश्चिम से पूर्व / दक्षिणावर्त* की और चक्कर लगाते है , जबकि *अन्य सभी ग्रह पूर्व से पश्चिम की और* चक्कर लगाते है ।

➡ *प्लेटो ग्रह* को जिसे *प्राक सम्मलेन , 2006 को बौने ग्रह* करार दिया *Underworld* का देवता माना जाता है ।

बुध ग्रह

➡ *सुख समृद्धि* एवं *सम्पन्नता का देवता* बुध ग्रह का कोई भी *उपग्रह नही है , जिसे *' मर्करी* के नाम से जाना जाता है।

➡ सूर्य के सबसे *नजदीक* स्थित है ।

➡ इसका सबसे विशिष्ट गुण यह है कि इसमें *चुम्बकीय क्षेत्र*पाया जाना है ।

➡ बुध ग्रह पर *दिन अत्यधिक गर्म एवं रातें अत्यधिक ठंडी* होती है ।

शुक्र ग्रह

➡ *सुंदरता का देवता , वीनस देवी (यूरोपीय लोग) , भौंर व साँझ का तारा* शुक्र ग्रह कहलाता है।

➡ *पृथ्वी का सबसे निकटतम ग्रह* है।

➡ आकार , व्यास , घनत्व में पृथ्वी के समान होने के कारण इसे *पृथ्वी की जुड़वा बहन* भी कहते है।

➡ शुक्र ग्रह का कोई *उपग्रह* नही है।

मंगल ग्रह

➡ मंगल ग्रह *लाल ग्रह तथा देवताओ का ग्रह* कहलाता है ।

➡ मंगल ग्रह पर *वायुमंडल का पतला आवरण है , जिसमे नाइट्रोजन एवं आर्गन* गैसे मौजूद है।

➡ यह ग्रह *कक्षातल में 25 डिग्री के कोण पर झुका* हुआ है ।

➡ इस ग्रह पर *पृथ्वी के समान दो ध्रुव* पाए जाते है । जिसके कारण यहाँ पृथ्वी के *समान ऋतू परिवर्तन* होता है ।
➡ इस ग्रह पर *जल एवं जीवन की संभावना के अवशेष* मिले है ।
➡ मंगल ग्रह पर *निक्स ओलंपिया पर्वत स्थित* है जो *' माउन्ट एवरेस्ट '* से *3 गुना अधिक ऊँचा*है ।
➡ इसके दो उपग्रह है : -
(1) *डिमोस* : - सौरमंडल का सबसे छोटा उपग्रह
(2) *फेबोस*

बृहस्पति ग्रह

➡ यह सौरमंडल का *सबसे बड़ा ग्रह* है ।
➡ इसे *शीतल ग्रह / देवताओ पर शासन करने वाला ग्रह* भी कहा जाता है।
➡ यह *पीले रंग का ग्रह* है।
➡ इसके *परिभ्रमण काल 9 घण्टे 50 मिनट 30 सैकंड* है , जो अन्य ग्रहों में *सबसे कम* है ।
➡ इसके *16 उपग्रह* है , जिनमे *' गेनीमिड ' सबसे बड़ा सौरमंडल का उपग्रह* है ।

पृथ्वी ग्रह

➡ सूर्य की दूरी के अनुसार *पृथ्वी तीसरा* और *आकार के अनुसार पाँचवाँ* बड़ा ग्रह है।
➡ पृथ्वी ग्रह को *जीवंत ग्रह* कहा जाता है ।
➡ पृथ्वी का *औसत तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड* है ।
➡ पृथ्वी के लगभग *71 % भाग पर जल* पाया जाता है।
➡ चंद्रमा की तुलना मे पृथ्वी लगभग *81 गुना* बड़ी है ।
➡ पृथ्वी अपने *अक्ष* पर *23.5 डिग्री* एवं *कक्षा तल* पर *66.5 डिग्री* पर झुकी हुई है ।
➡ पृथ्वी की दो *गतियां :-*
1 *घुर्णन गति / दैनिक गति :- 23 घंटे 56 मिनट 04 सेकण्ड में* पूरी करती है ।
घुर्णन गति के कारण *दिन और रात* होते है ।
2 *परिकर्मण / वार्षिक गति : - 365 दिन 6 घंटे* में पूरी करती है ।
परिक्रमण गति के कारण *ऋतुएँ परिवर्तन* होती है ।
➡ पृथ्वी को सूर्य की एक पपरिक्रमा करने में लगा समय *" सौर वर्ष "* कहलाता है ।

➡ *भूमध्य* रेखा पर *गुरुत्वीय त्वरण का मान न्यूनतम* होता है , जिसके कारण *वस्तु का भार भी न्यूनतम* होता है । इसलिए किसी वस्तु का उछाल *अधिकतम* होता है , जबकि *ध्रुवो पर न्यूनतम* होता है ।

➡ पृथ्वी के वायुमंडल में सर्वाधिक मात्रा *नाइट्रोजन गैंस 78.03% , ऑक्सीजन 20.8% , कार्बन-डाई-ऑक्साइड 0.3 - 0.4%*होती है ।

➡ पृथ्वी के वायुमंडल में सर्वाधिक मात्रा में पाई जाने वाली अक्रिय गैंस *"ऑर्गन "* होती है ।

शनि ग्रह

➡ शनि आकार में *दुसरा सबसे बड़ा ग्रह* है

➡ इसे *"कुण्डली वाला ग्रह "* (जिसके चारों और कई वलय या रिंग बनी हुई है) तथा *" कृषि का देवता "* भी कहते है ।

➡ शनि का सबसे बड़ा उपग्रह *" टिटोन "* है , जो आकार में *बुध ग्रह के बराबर* है।

➡ शनि ग्रह का उपग्रह *" फोबे "*इस ग्रह की विपरीत दिशा में परिक्रमा करता है ।

शनि के उपग्रह " टाइटन " पर पृथ्वी की तरह सघन वायुमंडल है । वहां भी नदियांऔर जलाशय है और धरातल पृथ्वी जैसा ही है । उसके वायुमंडल की प्रमुख गैंस नाइट्रोजन है । यहां जीवन की संभावना है या नही । इसका पता लगाने में वैज्ञानिज अभी प्रयासरत है ।

अरुण ग्रह

➡ *हरे रंग का ग्रह , लेटा हुआ ग्रह* तथा *" स्वर्ग का देवता "* कहलाने वाला यह ग्रह आकार में *तीसरा सबसे बड़ा ग्रह*है ।

➡ इस ग्रह की *खोज 13 मार्च , 1781 ई.* में *' सर विलियम हरसल '*द्वारा की गयी थी ।

➡ अरुण ही *एकमात्र ऐसा ग्रह* है जो *एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक अपनी परिक्रमा कक्ष में सूर्य के सामने* रहता है ।

वरुण ग्रह

➡ आकार की दृष्टि से *चौथे बड़े इस ग्रह* की *खोज 1846 ई.* में *एड्म्स और लेवेरियर* ने की थी ।

➡ यह *हरे रंग का ग्रह* है । इसे *ससमुन्द्र का देवता / जलीय ग्रह* (भारतीय ज्योतिषशास्त्री) भी कहा जाता है ।

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

राजस्थान की जलवायु

➡ अधिकांश राजस्थान *शीतोष्ण जलवायु कटिबंध* में आता है ।

➡ राज्य की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों में *अक्षाशीय स्थिति , समुन्द्र से ऊंचाई , दुरी , पर्वतीय दिशा , पवनों की दिशा , मिट्टी का प्रकार व वनस्पति की मात्रा* आदि महत्वपूर्ण है ।

➡ कर्क रेखा पर क्षेत्रफल में *सबसे बड़ा राज्य राजस्थान* है।

➡ *अरब सागर* से राजस्थान की कुल दूरी *400 किमी.* है ।

➡ *बंगाल की खाड़ी* से राज्य की कुल दूरी *2900 किमी.* है ।

➡ *अरावली पर्वतमाला* की समुंद्रतल से औसत ऊंचाई *930 मीटर* है ।

➡ समुंद्रतल से राजस्थान के अधिकांश भाग की औसत *ऊंचाई 370 मीटर* है ।

➡ सामान्यत समुंद्रतल से ऊंचाई बढ़ने जे समय *तापक्रम घटता* है जिसकी सामान्य *ह्रास दर प्रति 165 मीटर की ऊंचाई पर 1 सेंटीग्रेट* होती है ।

➡ समुन्द्र की गहराई को *फेदोमीटर* यंत्र से मापा जाता है तथा गहराई *फेदम* में मापी जाती है ।

➡ राजस्थान के सर्वाधिक नजदीक स्थित सागरीय भाग *कच्छ की खाड़ी* है ।

➡ राजस्थान का औसत वार्षिक तापमान *37 - 38 से.* है ।

➡तापमान मापी यंत्र *थर्मामीटर* होता है ।

➡ राजस्थान के सर्वाधिक गर्म महीने *मई - जून* है ।

➡ राहस्थान के सबसे ठंडे महीने *दिसम्बर - जनवरी* है ।

➡ राजस्थान में सर्वाधिक तापमान का समय *सायं 3 बजे* का होता है ।

➡ राजस्थान में सबसे कम तापमान का समय *सुबह 5 बजे* का होता है ।

➡ राज्य में सर्वाधिक दैनिक तापान्तर *पश्चिमी क्षेत्र* का रहता है ।

➡ राजसरहं का पश्चिम शुष्क प्रदेश भारत का सबसे *गर्म प्रदेश* माना जाता है ।

➡ राजस्थान में वर्षा का वार्षिक औसत *57-58 सेमी.* है । वर्षा मापी यंत्र *रेनो मीटर* होता है ।

➡ राज्य में सर्वाधिक वर्षा वाले महीने *जुलाई - अगस्त* है ।

➡ राज्य में सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र *दक्षिण - पूर्वी* क्षेत्र है ।

➡ राज्य में सबसे कम वर्षा वाला क्षेत्र *उत्तर - पश्चिम* क्षेत्र है ।

➡ राज्य में सर्वाधिक वर्षा वाला जिला *झालावाड़ (100 सेमी.)* है। यहां *40 दिन* तक वर्षा होती है ।

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

➡ राज्य में सबसे कम वर्षा वाला जिला *जैसलमेर (10 सेमी.)* है । यहां वर्षा की अवधि मात्र *5 दिन* है ।
➡ सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान *माउन्ट आबू - सिरोही* (125 -150 सेमी.) है ।
➡ सबसे कम वर्षा वाला स्थान *सम (जैसलमेर- 5 सेमी.)* है ।
➡ राज्य में वर्षा के दिनों की औसत संख्या *वर्षभर में 29 दिन* है ।
➡ राजस्थान की *औसत वार्षिक वर्षा के बराबर* औसत वर्षा वाला जिला *अजमेर* है ।
➡ *50 सेमी. वर्षा* रेखा राज्य को *दो भागों* में विभाजित करती है ।
➡ 50 सेमी. वर्षा रेखा के *उत्तर पश्चिम* में वर्षा कम होती है जबकि *दक्षिण - पूर्व* में अधिक होती है ।
➡ जिस दिन *0.25 सेमी.* से अधिक वर्षा हो उस दिन को *वर्षा वाला दिन* कहा जाता है ।
➡ राज्य के दक्षिण भाग में अधिक वर्षा का कारण *अरावली पर्वतों की ऊंचाई* है ।
➡ राज्य में बार - बार पड़ने वाले सूखे व अकाल का मुख्य कारण *अनियमित वर्षा* है ।
➡ *दोगड़ा : -* राज्य में होने वाली *मानसून पूर्व की वर्षा* को दोगड़ा कहा जाता है ।
➡ वाष्पोत्सर्जन मापन यंत्र *पोटो मीटर* है ।
➡ राज्य में वाष्पोत्सर्जन की सर्वाधिक दर वाला महीना *जून* है । एवं कम दर वाला महीना *दिसम्बर* है ।
➡ राज्य में वाष्पोत्सर्जन की सर्वाधिक दर वाला जिला *जैसलमेर* है । एवं कम दर वाला जिला *डूंगरपुर* है ।
➡ राजस्थान में सर्वाधिक आर्द्रता वाला महीना *अगस्त* एवं कम आर्द्रता वाला महीना *अप्रेल* है ।
➡ *आर्द्रता* मापन यंत्र *हाइग्रोमीटर* है ।
➡ राज्य में सर्वाधिक आर्द्रता वाला जिला *झालावाड़* एवं न्यूनतम आर्द्रता वाला जिला *जैसलमेर* है ।
➡ राज्य में सर्वाधिक ओलावृष्टि *मार्च - अप्रेल* के महीने में होती है ।
➡ राज्य में अधिकतर *ओलावृष्टि सर्दी के* मौसम में होती है ।

अतिवृष्टि - राज्य में कई स्थानों पर *24 घंटे में 20-30 सेमी. वर्षा* होती है , जिससे अतिवृष्टि की स्थिति देखने को मिलती है ।
खण्ड वृष्टि - राज्य के किसी गाँव / स्थान में सामान्यतया *सूखा / वर्षा की कमी होती है* , परन्तु वहां अचानक ही तेज वर्षा हो जाए , ऐसे स्थान को *खण्ड वृष्टि* कहते हैं ।
अनावृष्टि - जहां सामान्यतया वर्षा की कमी के कारण *सूखे की स्थिति / अकाल की स्थिति* आती हो , ऐसे स्थान को अनावृष्टि कहते है ।

➡ राज्य में चलने वाली हवाओं की अधिकतम गति *120 -140 किमी. प्रति /घण्टा* होती है ।
➡ राज्य में सर्वाधिक आंधियां *मई -जून* के महीने में एवं धीमी गति से आंधियां *नवम्बर* के महीने में चलती है ।
➡ सर्वाधिक आँधियों वाले जिले *श्री गंगानगर (27 दिन)* , *हनुमानगढ़ (24 दिन)* है ।
➡ न्यूनतम आँधियों वाले जिले *झालावाड़ (3 दिन) , कोटा (5 दिन)* है ।
➡ राज्य में *पौष मास* में चलने वाली हवा को *सीली* के नाम से जाना जाता है ।
➡ *वाष्प के कणों* के साथ चलने वाली लू को *झाला* के नाम से जाना जाता है ।
➡ *ज्येष्ठ मास* में चलने वाली गर्म हवा को *तवा* के नाम से जाना जाता है ।
➡ *भयंकर आवाज* के साथ तेज गति से चलने वाली हवा को *अर्डाव* के नाम से जाना जाता है ।

राजस्थान में प्रवेश करने वाली हवाओं के नाम

➡ राज्य में *उत्तर दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *धरोड़ , धराऊ , उत्तरार्द्ध* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *दक्षिण दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *लंकाऊ* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *पूर्व दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *पुरवईया , पुरवाई , पुरवा , आगुणी* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *पश्चिमी दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *पच्छउ , पिछवाई , पिच्छवा , आथूणी* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *उत्तर - पूर्व दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *संजेरी* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *उत्तर - पश्चिमी दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *सुरया* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *दक्षिण - पूर्व दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *चील* के नाम से जाना जाता है ।
➡ राज्य में *दक्षिण - पश्चिम दिशा से* प्रवेश करने वाली हवा को *समंदरी , समुंदरी* के नाम से जाना जाता है ।
➡ *जून-जुलाई* के महीनों में *दक्षिणी-पूर्वी* क्षेत्रों में आने वाला तूफान *वज्र तूफान* कहलाता है ।
➡ सर्वाधिक वज्र तूफान *झालावाड़ व जयपुर* जिलों में आते है ।
➡ सबसे कम वज्र तूफान *बाड़मेर व बीकानेर* जिलों में आते है ।

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

: *राजस्थान के जलवायु प्रदेश*

राज्य के जलवायु प्रदेश को *पांच भागों* में बांटा गया है : -

1. शुष्क जलवायु प्रदेश
2. अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश
3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश
4. आर्द्र जलवायु प्रदेश
5. अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश

1. शुष्क जलवायु प्रदेश: -

➡ इसमें *जैसलमेर* (प्रतिनिधि नगर) *दक्षिणी गंगानगर , पश्चिमी बीकानेर , हनुमानगढ़ , जोधपुर* (फलौदी) आदि स्थान आते है ।

➡ इस क्षेत्र की औसत वर्षा *10-20 सेमी.* एवं तापमान *शीतऋतु में 10-17 डिग्री से.* एवं *ग्रीष्मऋतु में 35 डिग्री से.* तक होता है ।

➡ इस क्षेत्र में छोटी पत्तियों वाली *कंटीली वनस्पति* पायी जाती है जिसे *मरुदभिद / जिरोफाइट* कहते है ।

2. अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश : -

➡ इस क्षेत्र में *गंगानगर , बीकानेर* (प्रतिनिधि नगर) *, बाड़मेर , चूरू , सीकर , झुंझुनू , जोधपुर , पाली , जालौर , नागौर , अजमेर , टोंक , दौसा व जयपुर* आदि शामिल हैं ।

➡ इस प्रदेश में औसत वर्षा *20-40 सेमी.* एवं तापमान *ग्रीष्मकाल में 32 डिग्री से.* एवं *शीतऋतु में 10-16 डिग्री से.* तक रहता है ।

➡ इस क्षेत्र में *स्टेपी प्रकार की वनस्पति व घास के मैदान* पाये जाते है ।

➡ यहां प्राप्त होने वाले वृक्षों में *आक , धोक , बबूल , खींप , जाल , रोहिड़ा , खेजड़ी* आदि एवं *सेवण व लावण* नामक घास पायी जाती है ।

➡ राजस्थान की *सर्वाधिक खारे पानी की झींले* इसी क्षेत्र में मिलती है ।

3. उप आर्द्र जलवायु प्रदेश : -

➡ इसके अंतर्गत *जयपुर* (प्रतिनिधि) *, अजमेर , पाली , जालौर , सिरोही , भीलवाड़ा , टोंक , अलवर* आदि जिले आते है ।

➡ इस क्षेत्र में *औसत वर्षा 40-60 सेमी.* एवं तापमान *शीतकाल में 12-18 डिग्री से.* व *ग्रीष्मकाल में 28-32 डिग्री से.* तक होता है ।

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

➡ इस क्षेत्र में *पर्वतीय वनस्पति एवं पतझड़ वनस्पति* पायी जाती है । जिसमें *आम , नीम , आंवला , खेर , बहड़* आदि वृक्ष प्रमुख है ।

4. आर्द्र जलवायु प्रदेश : -

➡ इसके अंतर्गत *धौलपुर , सवाई माधोपुर* (प्रतिनिधि नगर) *, करौली , कोटा , बूंदी , टोंक , चितौड़गढ़ , राजसमन्द व उदयपुर* आदि जिले आते है ।

➡ इस क्षेत्र में औसत वर्षा *40-80 सेमी.* एवं तापमान *ग्रीष्मकाल में 32-34 डिग्री से.* व *शीतकाल में 14-17 डिग्री से.* तक होता है ।

➡ इस क्षेत्र में *सघन पतझड़ वन* पाये जाते है , जिनमें *आम , बेर , इमली , नीम , बबूल , शहतूत , शीशम , गूगल , जामुन* आदि वृक्ष पाये जाते है ।

***5. अति आर्द्र जलवायु प्रदेश : -**

➡ इस प्रदेश में *झालावाड़* (प्रतिनिधि नगर) *, कोटा , उदयपुर का दक्षिणी भाग , आबू पर्वत* (सिरोही) *, डूंगरपुर एवं बांसवाडा* आदि क्षेत्र शामिल है ।

➡ इस क्षेत्र में औसत वर्षा *80-150 सेमी.* व तापमान *ग्रीष्मकाल में 30-38 डिग्री से.* व *शीतकाल में 14-18 डिग्री से.* तक रहता है ।

➡इस प्रदेश की मुख्य वनस्पति *सवाना तुल्य प्रकार की* है , जिसमे जामुन , आम , शहतूत , सागवान , शीशम , बांस , महुआ* आदि वृक्ष मुख्य रूप से उगाये जाते है ।

राजस्थान *विषम जलवायु वाला* प्रदेश है , परन्तु *उदयपुर* राज्य का एक मात्र ऐसा जिला है जहाँ की जलवायु *सम जलवायु* है ।

दूसरा सबसे ठंडा स्थान *डबोक* (उदयपुर) है ।

राज्य में *भारतीय मौसम विभाग की वेधशाला जयपुर* में स्थित है ।

राज्य की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

➡ राज्य की जलवायु को मुख्यत *7 कारक* प्रभावित करते है -

1. अक्षाशीय एवं देशांतरीय विस्तार : -

➡ राजस्थान अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार के आधार पर *शीतोष्ण जलवायु* वाला क्षेत्र है ।

➡ परंतु राज्य के दक्षिण अर्थात *डूंगरपुर एवं बांसवाडा से* कर्क रेखा गुजरती है जिससे यह क्षेत्र *उष्ण कटिबंधीय जलवायु* वाला क्षेत्र है ।
➡ इस प्रकार *राजस्थान का दक्षिणी भाग " उष्ण कटिबंधीय "* जलवायु वाला क्षेत्र एवं *बाकी क्षेत्र " उपोष्ण कटिबंध "* वाला क्षेत्र है ।

2. समुन्द्र तल से दूरी : -

➡ भारतीय उपमहाद्वीप के आंतरिक भाग में स्थित होने के कारण राज्य की जलवायु पर सामुंद्रिक स्थिति का प्रभाव नही पड़ता है इसी कारण *राजस्थान कु जलवायु उपोष्ण जलवायु* है ।

3. अरावली पर्वतमाला की स्थिति : -

➡ राज्य में अरावली पर्वत माला का विस्तार *दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व* की ओर है जो *अरब सागरीय मानसून के समान्तर* है । इस कारण राज्य में अधिक वर्षा नही हो पाती है ।
➡ राज्य में वर्षा *दक्षिण - पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा* से होती है । जिससे राज्य में *अरावली पर्वत माला* के *पूर्व में वर्षा अच्छी* होती है जबकि *पश्चिमी भाग में न्यूनतम वर्षा* होती है।

4. धरातलीय स्थिति : -

➡ राजस्थान की धरातलीय ऊंचाई *370 मी. से कम* है एवं अरावली पर्वतमाला और *दक्षिण - पूर्व क्षेत्र* की धरातलीय ऊंचाई *370 मी. से अधिक* है ।

5. वनस्पति तत्व : -

➡ राज्य के *पश्चिमी क्षेत्र में न्यूनतम वन* पाये जाते हैं इसी कारण यहां की जलवायु *शुष्क* है , इसके विपरीत *अरावली पर्वतीय क्षेत्र एवं दक्षिणी - पूर्वी क्षेत्र* में अधिक वन की सघनता वायुमंडलीय दशाओं को प्रभावित करती है ।

6. मृदा की संरचना : -

➡ राज्य के *पश्चिमी भाग में रेतीली एवं मोटे कणों वाली मिट्टी* पायी जाती है जो दिन में बहुत *जल्दी गर्म एवं रात में बहुत जल्दी ठंडी* हो जाती है इसलिए *जैसलमेर में सर्वाधिक दैनिक तापान्तर* पाया जाता है ।

➡ इसके विपरीत *पूर्वी एवं दक्षिणी - पूर्वी* राज्य में *चिकनी दोमट व काली मिट्टी* पायी जाती है जिसके कण बहुत हल्के होते है यह मिट्टी *बहुत धीरे गर्म व बहुत धीरे ठंडी* होती है इसलिए इस क्षेत्र की *जलवायु आर्द्र* बनी रहती है ।

7. समुन्द्र तल से ऊंचाई : -

➡ जो भाग समुंद्रतल से जितना ऊंचा होगा वहां की जलवायु *ठंडी* होगी ।

राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति

➡ राजस्थान में लगभग *34,610 वर्ग किमी.* क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति मिलती है ।

➡ यह राज्य के कुल क्षेत्रफल का *10.12%* है ।

➡ राजस्थान में सघन वन आवरण क्षेत्र केवल *3.83%* है ।

➡ राजस्थान में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र मात्र *0.03 हैक्टर* है । जो सम्पूर्ण भारत के प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र *0.13 हैक्टर* से काफी कम है ।

➡ राजस्थान की वनस्पति यहां की *जलवायु , मिट्टी , भूमि की स्थिति तथा भूगर्भिक इतिहास* से प्रभावित है ।

यहां पर प्राकृतिक वनस्पति *तीन* प्रकार की पायी जाती है : -

1. वन *2. घास* *3. मरुस्थलीय वनस्पति*

राजस्थान में वनों के प्रकार

➡ राज्य में *भौगोलिक दृष्टि से तीन प्रकार के* वन मिलते है : -

1. उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन

2. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन

3. उपोष्ण पर्वतीय वन

✍ *1. उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन : -*

➡ इस प्रकार के वन *पश्चिमी मरुस्थलीय शुष्क व अर्द्ध - शुष्क प्रदेशों* में पाए जाते है ।

➡ *जैसलमेर , बाड़मेर , पाली , बीकानेर , चुरू , नागौर , सीकर , झुंझुनू* आदि जिलों में पाए जाते है ।

➡ इन वनों में *पेड़ बहुत छोटे आकार के* होते है व *छोटी झाड़ियों* की अधिकता होती है ।
➡ इन वनों में *खेजड़ी , रोहिड़ा , बैर , कैर , थोर* आदि वृक्ष व झाड़ियां उगते हैं ।
➡ इन पेड़ों व झाड़ीयों की *जड़े लंबी* होती है तथा *पत्तियां कंटीली* होती है ।
➡ *फोग , आकड़ा , कैर , लाना , अरणा व झड़बेर* इस क्षेत्र की प्रमुख झड़ियाँ है ।
➡ यहाँ कई प्रकार की घास भी पाई जाती है जिनमे *सेवण व धामण* बहुत ही प्रसिद्ध है *धामण घास* दुधारू पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी होती है । जबकि *सेवण* घास सभी पशुओं के लिए पौष्टिक होती है ।

✍ ***2. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ वाले वन : -***

➡ ये वन राज्य के *50 -100 से.मी.* वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं ।
➡ ये वन राज्य के *मध्य , दक्षिणी व दक्षिणी - पूर्वी भागों* में बहुतायत से पाए जाते है ।
➡ विभिन्न प्रकार के वृक्षों की विविधता के कारण इन वनों के कई उप प्रकार है : -

(क) शुष्क सागवान के वन : -

➡ ये वन *250 - 450 मीटर की ऊंचाई* वाले क्षेत्रों में मिलते है ।
➡ इन वनों का विस्तार *उदयपुर , डूंगरपुर , झालावाड़ , चितौड़गढ़ व बारां* जिलों में मिलते है ।
➡ इन वनों में सागवान की मात्रा *50 - 75%* जे मध्य मिलती है ।
➡ सागवान के अलावा *तेंदू , धावड़ा , गुरजन , गोंदल , सिरिस , हल्दू , खैर , सेमल , रीठा , बहेड़ा व इमली* के वृक्ष भी पाए जाते है ।
➡ सागवान अधिक *सर्दी व पाला* सहन नहीं कर पाता है अतः इन वृक्षों का विस्तार *दक्षिणी क्षेत्रों* में अधिक है ।
➡ सागवान की लकड़ी *कृषि औजारों व इमारती कार्यों* के लिए बहुत ही उपयोगी है ।

(ख) सालर वन : -

➡ ये वन *450 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले पहाड़ी इलाकों में* मिलते है ।
➡ राज्य में इन वनों का विस्तार *उदयपुर , राजसमन्द , चितौड़गढ़ , सिरोही , पाली , अजमेर , जयपुर , अलवर व सीकर* जिलों में मिलता है ।
➡ इन वनों के प्रमुख वृक्ष *सालर , धोक , कठिरा व धावड़* है ।
➡ सालर वृक्ष *गोंद* का अच्छा स्त्रोत है । इसकी लकड़ी *पैकिंग के डिब्बे बनाने* में ली जाती है ।

(ग) बांस के वन : -

➡ राज्य के *बांसवाडा , चितौड़गढ़ , उदयपुर , बारां , कोटा व सिरोही* जिलों में इन वनों का विस्तार है ।

➡ बांसवाडा का नाम बांस के वृक्षों की अधिकता के कारण पड़ा ।

➡ बांस के अलावा *धाकड़ा , सागवान , धोकड़ा* आदि वृक्ष भी पाए जाते है ।

(घ) धोकड़ा के वन : -

➡ राज्य के रेगिस्तानी क्षेत्र को छोड़कर सभी क्षेत्र इसके अनुकूल है । अतः *राज्य में इन वनों का विस्तार सबसे अधिक* है ।

➡ ये वन *240 - 760 मीटर की ऊंचाई* के मध्य अधिक मिलते है ।

➡ इनका विस्तार *कोटा , बूंदी , सवाई माधोपुर , जयपुर , अलवर , अजमेर , उदयपुर , राजसमन्द व चितौड़गढ़* जिलों में है ।

➡धोक / धोकड़ा के अलावा इन वनों में *अरुंज , खैर , खिरनी , सालर , गोंदल* के वृक्ष भी पाए जाते है ।

➡ धोक की लकड़ी मजबूत होती है । इसे जलाकर इसका *कोयला* बनाया जाता है ।

(ड़) प्लास के वन : -

➡ ये वन उन क्षेत्रों में फैले है जहाँ *धरातल कठोर व पथरीला* है ।पहाड़ियों के मध्य जल पठारी धरातल है , वहाँ यह बहुतायत में पाए जाते है

➡ ऐसे मैदानी क्षेत्र जो *कंकरीले है वे जहाँ मिट्टी अपेक्षाकृत कम है* वहाँ भी ये वन मिलते है ।

➡ ये वन मुख्यत *अलवर , अजमेर , सिरोही , उदयपुर , पाली , राजसमन्द व चितौड़गढ़* में फैले हुए है ।

(च) खैर के वन : -

➡ इन वनों जा फैलाव *दक्षिणी पठारी* भाग में है । यथा *झालावाड़ , कोटा , बारां , चितौड़गढ व सवाई माधोपुर* जिलों में फैले हुए है ।

(छ) बबूल के वन : -

➡ ये वन *गंगा नगर , बीकानेर , नागौर , जालौर , अलवर , भरतपुर* आदि जिलों में मिलते है ।

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

➡ जिन क्षेत्रो में धरातल में नमी कम है , वहां इनके वृक्षों जी मात्रा कम है ।

(ज) मिश्रित पर्णपाती : -

➡ ये वन राज्य के *दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र* में पाए जाते हैं । *सिरोही , उदयपुर , राजसमन्द , चितौड़गढ़ , कोटा व बारां* जिलों में इनका विस्तार अधिक है ।

➡ इन वनों में पाए जाने वाले वृक्ष *आँवला , शीशम , सालर , तेंदू , अमलताश , रोहन , करंज , गूलर , जामुन , अर्जुन* आदि है ।

✍ *3. उपोष्ण पर्वतीय वन : -*

➡ इस प्रकार के वन केवल *आबू पर्वतीय* क्षेत्र में पाए जाते है ।

➡ इन वनों में *सदाबहार एवं अर्द्ध - सदाबहार* वनस्पति होती है ।

➡ यहां वनों की *सघनता* अधिक है अतः *सालभर हरियाली* बनी रहती है ।

➡ इन वनों में *आम , बांस , नीम , सागवान* आदि के वृक्ष पाए जाते है ।

➡ राज्य के कुल वन क्षेत्र के *आधे प्रतिशत* से भी कम भाग पर इस प्रकार के वन पाए जाते हैं ।

राजस्थान में वन्य जीव एवं अभ्यारण्य

➡ वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए भारत में सर्वप्रथम कानून *सम्राट अशोक* के द्वारा *तीसरी शताब्दी ई.पू.* में बनाया गया ।

➡ भारतीय संविधान के *भाग -4 के अनु. 48 (क) एवं 51 (क)* में भी *वन्य जीवों के संरक्षण* का प्रावधान किया गया है ।

➡ *टोंक* राज्य की प्रथम रियासत थी , जिसने सर्वप्रथम *1901 में शिकार पर प्रतिबंध* लगाया ।

➡ *वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972* को भारत सरकार के द्वारा *9 सितम्बर 1972* को अपनाया गया ।

➡ इस अधिनियम को राजस्थान सरकार के द्वारा *1 सितम्बर 1973* में अपनाया गया ।

➡ वन्य जीव संविधान की *समवर्ती सूची* का विषय है । पहले यह *राज्य सूची* का विषय था । *42 वें संविधान संशोधन 1976* के द्वारा इसे समवर्ती सूची में शामिल किया गया ।

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 के अंतर्गत वन्य जीवों के क्षेत्रों को *तीन भागों* में बांटा गया है : -

1. राष्ट्रीय उद्यान

2. अभ्यारण्य

3. आखेट निषिद्ध क्षेत्र

✍ *1. राष्ट्रीय उद्यान*

➡ राजस्थान में *3* राष्ट्रीय उद्यान स्थित है : -

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (सवाई माधोपुर) - 1980 में

2. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर) -1981 में

3. मुकन्दरा हिल्स / दर्रा अभ्यारण्य (कोटा , झालावाड़) - 2012 में

चार अभ्यारण्य राष्ट्रीय उद्यान के लिए प्रस्तावित है -

1. मरू उद्यान (जैसलमेर , बाड़मेर)

2. सरिस्का अभ्यारण्य (अलवर)

3. तालछापर (चुरू)

4. कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य (उदयपुर , पाली , राजसमन्द)

➡ रणथम्भौर राष्ट्रीय व सरिस्का अभ्यारण्य *' बाघ संरक्षण '* के लिए है ।

➡ राज्य का क्षेत्रफल में बड़ा राष्ट्रीय उद्यान *रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (लगभग 282 वर्ग किमी.)* है ।

➡ राज्य का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान *केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (लगभग 28 वर्ग किमी.)* है ।

➡ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान *विश्व विरासत सूची* में शामिल है । यह *साइबेरियन सारस* के लिए प्रसिद्ध है । अब इनकी संख्या कम हो गई है ।

✍ *2. अभ्यारण्य*

➡ राज्य में *22 वन्य जीव अभ्यारण्य*(NCERT बुक में) है । प्रस्तावित अभ्यारण्य सहित अभ्यारण्यों की संख्या *26* है

➡ ये अभ्यारण्य निम्न है : -

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

Note इसे निम्न प्रकार से देखे : -

अभ्यारण्य - स्थापना - क्षेत्रफल - जिले

1. सज्जनगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य - 17 फरवरी , 1987 - 5.19 वर्ग किमी. - उदयपुर

2. रामगढ विषधारी - 20 मई ,1982 - 307 वर्ग किमी. - बूंदी

3. फुलवारी की नाल - 6 अक्टूबर , 1983 - 511 वर्ग किमी. - उदयपुर

4. सीता - माता वन्य जीव अभ्यारण्य - 2 जनवरी,1979 - 423 वर्ग किमी. - तापगढ़

5. माउन्ट आबू वन्य जीव अभ्यारण्य -5 अप्रेल,2008 - 289 वर्ग किमी. - सिरोही

6. राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल - 1979 - 274.74 वर्ग किमी. - कोटा , बूंदी , सवाई माधोपुर , करौली , धौलपुर

7. भैंसरोडगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य - 1983 - 201.4 वर्ग किमी. - चितौड़गढ़

8 . वन विहार वन्य जीव अभ्यारण्य - 1 नवम्बर , 1955 - 25 वर्ग किमी. - धौलपुर

9. शेरगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य - 30 जुलाई , 1983 - 81.6 वर्ग किमी. - बारां

10. बस्सी वन्य जीव अभ्यारण्य - 29 अगस्त , 1988 - 138 वर्ग किमी. - चितौड़गढ़

11. जवाहर सागर अभ्यारण्य - 9 अक्टूबर , 1975 - 182.1 वर्ग किमी. - कोटा

12. जयसमन्द वन्य जीव अभ्यारण्य - 1 नवम्बर , 1955 - 52 वर्ग किमी. - उदयपुर

13. नाहरगढ़ जैविक अभ्यारण्य - 22 सितम्बर , 1980 - 52.4 वर्ग किमी. - जयपुर

14. बंध बारेठा वन्य जीव अभ्यारण्य - 7 अक्टूबर , 1985 - 199 वेग किमी. - भरतपुर

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

15 केलादेवी वन्य जीव अभ्यारण्य - 19 जुलाई , 1983 - 676.8 वेग किमी. - करौली व सवाई माधोपुर

16. रावली टॉडगढ़ अभ्यारण्य - 28 सितम्बर , 1983 - 475.2 वर्ग किमी. - अजमेर , पाली , राजसमंद

17. जमुआ रामगढ अभ्यारण्य - 31 मई , 1982 - 300 वर्ग किमी. - जयपुर

18. सवाई मानसिंह - 30 नवम्बर , 1984 - 113 वर्ग किमी. - सवाई माधोपुर

19. रामसागर वन्य जीव अभ्यारण्य - 1 नवम्बर , 1955 - 34.4 वर्ग किमी. - धौलपुर

20. केसरबाग वन्य जीव अभ्यारण्य - 7 नवम्बर , 1955 - 13.76 वर्ग किमी. - धौलपुर

21. सरिस्का ' अ ' अभ्यारण्य - 20 जून , 2012 - 3.01 वर्ग किमी. - अलवर

22. सीता माता अभ्यारण्य - चितौड़गढ़

➡ मछली अभ्यारण्य बड़ी तालाब (उदयपुर) में प्रस्तावित है ।
➡ राज्य में भारत का पहला मोर अभ्यारण्य झुंझुनूं में प्रस्तावित है ।
➡ भालू अभ्यारण्य सुंडा माता पर्वत भीनमाल , जालौर में प्रस्तावित है ।
➡ गधों का अभ्यारण्य डूंडलोद , झुंझुनूं में प्रस्तावित है ।
➡ गायों का अभ्यारण्य अजमेर संभाग में प्रस्तावित है ।
➡ सर्प उद्यान , कोटा में स्थित है तथा भरतपुर में प्रस्तावित है ।
➡ राज्य का पहला साइंस पार्क जयपुर में तथा दूसरा झालरापाटन , झालावाड़ में है ।
➡ राजस्थान में विभूति पार्क उदयपुर जिले में स्थित है ।
➡ राजस्थान का पहला गिद्ध संरक्षण क्षेत्र जोहड़बीड़ बीकानेर में स्थित है ।
➡ जैसलमेर के शाहगढ़ बल्ज क्षेत्र को केंद्र सरकार ने देश का प्रथम चीता अभ्यारण्य घोषित किया है ।
➡ राज्य में रामसर कन्वेशन स्थल (वैटलैंड) -
1. घना पक्षी विहार - भरतपुर
2. सांभर झील - जयपुर

➡ राज्य में क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा अभ्यारण्य मरू उद्यान (जैसलमेर , बाड़मेर - 3162 वर्ग किमी.) है ।

➡ राज्य का सबसे छोटा अभ्यारण्य सरिस्का ' अ ' अलवर (3.01) है ।

✍ 3. आखेट निषिद्ध क्षेत्र

➡ राज्य में कुल 33 आखेट निषिद्ध क्षेत्र स्थित है , जो राज्य के 26,720 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैले हुए है ।

➡ क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा आखेट निषिद्ध क्षेत्र कोटसर - सावंतसर , चुरू में स्थित है ।

➡ क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का छोटा आखेट निषिद्ध क्षेत्र कनक सागर , बूंदी में है ।

➡ राज्य में सर्वाधिक आखेट निषिद्ध क्षेत्रों वाला जिला जोधपुर (7 आखेट निषिद्ध क्षेत्र) है ।

भारत की जलवायु

मानसून : एक नजर

✍✍✍✍✍✍✍✍

➡ मानसून *अरबी* शब्द *" मौसिम "* से बना है , जिसका अर्थ है - *मौसमी हवाओ या ऋतु* ।

➡ हमारे देश की जलवायु *अक्षांशीय स्थिति , समुंद्रतल से ऊंचाई , समुन्द्र से दूरी , पर्वतों की स्थिति व दिशा , पवनों की दिशा तथा धरातल की बनावट* आदि तत्वों से प्रभावित है ।

➡ ग्रीष्म ऋतु में यहां *समुंद्री पवनें* चलती है , जो *समुन्द्र से स्थल की ओर* आते हैं ।

➡ शीत ऋतु में यहां *स्थलीय पवनें* चलती है , जो *स्थल से समुन्द्र की ओर* जाती है ।

◆ *भारत की जलवायु मानसून प्रदान जलवायु* है ।

◆ लंबे समय (30 वर्षो से अधिक) के सम्मिलित रूप को *' जलवायु '* कहते है ।

✍ *ध्यातव्य रहे -* जलवायु में मुख्य रूप से *वायु , जल , ताप तत्वों को जोड़ा* गया व *इनकी गणना वर्षा* में होती है ।

मानसून की उत्पत्ति

➡ मानसूनी हवाओ की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित परम्परागत विचारधारा *सूर्य के कर्क रेखा व मकर रेखा पर लम्बवत चमकने से* संबधित है । इसके कारण एक *न्यून वायुदाब का केंद्र

पाकिस्तान में ' मुल्तान '* के आसपास बन जाता है । इसी समय *हिन्द महासागर व ऑस्ट्रेलिया* में तथा जापान के दक्षिण में *प्रशान्त महासागर* में *उच्च वायुदाब* का केंद्र बन जाता है ।

➡ हवाएं हमेशा *उच्च वायुदाब से न्यून वायुदाब* की ओर चलती है ।

➡ *हिन्द महासागर* के दक्षिण से उठने वाली वे *दक्षिणी - पश्चिमी* हवाएं भारत की ओर आती है तथा हिमालय से टकराकर यहां वर्षा करती है , इन्हें ही *दक्षिणी - पश्चिमी मानसून* कहा जाता है । इसे *ग्रीष्मकालीन मानसून* भी कहते है ।

➡ जब सूर्य की किरणें *कर्क रेखा* पर या इसके आसपास लम्बवत पड़ती है तो *उत्तरी गोलार्द्ध* (भारत) में *तेज गर्मी* पड़ती है ।

➡ जब *दक्षिणी गोलार्द्ध* में सूर्य की किरणें *मकर रेखा* व उसके आसपास के क्षेत्र पर लम्बवत पड़ने पर मध्य एशिया में *बेकाल झील* के पास व *मुल्तान* के आसपास *उच्च दाब* कायम हो जाता है ।

➡ *नवीनतम विचारधाराओं* के अनुसार मानसून की उत्पत्ति *क्षोभमंडल में विकसित सामयिक आँधियों से* मानी जाती है ।

➡ हवाओ का ऐसा प्रवाह जो निम्न क्षोभमंडल में पहुँचता है , उसी *जेट स्ट्रीम* से धरातल पर वापसी होती है ।

➡ वर्तमान समय में *मानसून की उत्पत्ति का सिद्धांत ' जेट पवन ' से सम्बंधित* है , जो कि ऊपरी वायुमंडल के संचालन से प्रभावित है ।

जेट वायु धाराएं

➡ जेट वायु धाराओं की खोज *द्वितीय विश्वयुद्ध* में हुई थी ।

➡ शीत या जाड़े की ऋतु में जेट स्ट्रीम क्षोभमंडल में लगभग *12 किमी.* की ऊंचाई पर स्थित है एवं हिमालय तथा तिब्बत पठार के अवरोध के कारण *दो शाखाओं* में विभक्त हो जाती है ।

➡ जेट स्ट्रीम के कारण ही *भूमध्य सागरीय पश्चिमी विक्षोभों* को *उत्तरी - पश्चिमी* भारत के क्षेत्र में प्रवेश करने और यहां के मौसम को प्रभावित का मौका मिलता है ।

जलवायु : परिस्थितियां

➡ भारत की जलवायु *मानसूनी जलवायु* है ।

➡ यहां की जलवायु परिस्थितियों को सामान्य रूप से *मानसून पूर्व की स्थिति , मानसून कल एवं मानसून वापसी* के कालक्रम में बांटा गया है ।

➡ *मानसून पूर्व की स्थिति* में देश में *भयंकर गर्मी* पड़ती है जिससे *उत्तरी भारत* में *निम्न वायुदाब* विकसित हो जाता है वे पवनें *समुन्द्र से स्थल* की और चलने लगती है ।
➡ *मानसून काल* में दक्षिणी - पश्चिमी से आने वाली पवनें *अरब सागर के मानसून* एवं *बंगाल की खाड़ी के मानसून* के रूप में भारत में वर्षा करती है । यह कल *वर्षाकाल* कहा जाता है।
➡ *मानसून वापसी* का समय *शीत ऋतु एवं ग्रीष्म* से सम्बंधित है ।

जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक : -

🔘 *(1) समुन्द्र तल से ऊंचाई : -*

➡ सामान्यतः *प्रति 165 मीटर की ऊंचाई पर 1 डिग्री से. ग्रे.* तापमान कम होता है ।
➡ एक ही अक्षांश पर स्थित होते हुए भी ऊंचाई की भिन्नता के कारण *ग्रीष्म कालीन* तापमान *मसूरी में 24 डिग्री से. ग्रे. , देहरादून में 32 डिग्री से. ग्रे.* तथा *अंबाला में 40 डिग्री से. ग्रे.* रहता है ।

🔘 *(2) समुन्द्र से दूरी : -*

➡ समुन्द्र तट पर स्थित नगरों में तापमान अति न्यून रहता है तथा जलवायु नम रहती है ।
➡ समुन्द्र से जैसे - जैसे दुरी बढ़ती जाती है वैसे ही तापमान एवं शुष्कता बढ़ती जाती है ।
➡ पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में वर्षा जा वार्षिक औसत 200 से.मी. से अधिक रहता है , जैसलमेर में यह औसत केवल 5 से.मी. रह जाता है ।

🔘 *(3) अक्षांशीय स्थिति : -*

➡ यह तापमान को *सबसे अधिक* प्रभावित करने वाला कारक है ।
➡ बढ़ते हुए अक्षाशों के साथ तापमान में *कमी* आती जाती है , क्योकि *सूर्य की किरणों का तिरछापन* बढ़ता जाता है ।
➡ भारत का उत्तरी भाग *शीतोष्ण प्रदेश* तथा दक्षिणी भाग *उष्ण प्रदेश* के अंतर्गत आता है ।

🔘 *(4) पर्वतों की स्थिति : -*

➡ *दक्षिणी - पश्चिमी* मानसून से प्रायद्वीपीय पठार के *पश्चिमी ढालो* पर प्रचुर वर्षा होती है , जबकि इसके विपरीत ढाल एवं प्रायद्वीपीय पठार दक्षिणी - पश्चिमी मानसून के सृष्टि - छाया क्षेत्र में अंतर है ।

(5) पर्वतों की दिशा : -

➡ *साइबेरियाई* से आने वाली ठंडी पवनों को *हिमालय* रोकता है । तथा *हिमालय* ग्रीष्मकालीन मानसून को रोककर भारत में ही वर्षा कराते है ।

➡ पश्चिमी राजस्थान की शुष्क जलवायु का मुख्य कारण *अरावली श्रेणी की दिशा दक्षिणी - पश्चिमी मानसून के समान्तर* होना है ।

(6) पवनों की दिशा : -

➡ ग्रीष्मकालीन मानसून *हिन्द महासागर* से चलने के कारण *उष्ण व आर्द्र* होते है , अतः वर्षा करते है ।

➡ शरद कालीन मानसून *स्थली व शीत* क्षेत्रों से चलते है , अतः ये *शीत व शुष्कता* लाते हैं ।

(7) उच्च स्तरीय वायु संचरण : -

➡ भारत की जलवायु *क्षोभमंडल की गतिविधियों* से प्रभावित होती है

➡ मानसून की *कालिक व मात्रात्मक अनिश्चितता* उच्च स्तरीय वायु संचरण की दिशाओं पर निर्भर करती है ।

इनके अलावा *मेघच्छादन की मात्रा , वनस्पति आवरण , समुंद्री धारा* आदि भी भारत की जलवायु को आंशिक रूप से प्रभावित करती है ।

भारत सरकार के *मौसम विभाग* के अनुसार भारत की जलवायु परिस्थितियों को *चार ऋतुओं* में बांटा है : -

(क) उत्तर - पूर्वी या शीतकालीन मानसून काल : -

1. शीत ऋतु - दिसंबर से फरवरी तक ।

2. ग्रीष्म ऋतु - मार्च से मध्य जून तक ।

(ख) दक्षिणी - पश्चिमी या ग्रीष्म कालीन मानसून : -

3. वर्षा ऋतु - मध्य जून से मध्य सितंबर तक ।
4. शरद ऋतु - मध्य सितंबर से मध्य दिसंबर तक ।

*** भारतीय संस्कृति के अनुसार छः ऋतुएँ मानी गई है -***

***1.* बसंत ऋतु *-* चैत्र - बैशाख**
***2.* ग्रीष्म ऋतु *-* ज्येष्ठ - आषाढ़**
***3.* वर्षा ऋतु *-* श्रावण - भाद्रपद**
***4.* शरद ऋतु *-* आश्विन - कार्तिक**
***5.* शीत ऋतु *-* मार्गशीष - पोष**
***6.* हेमन्त ऋतु *-* माघ - फाल्गुन**

1. शीत ऋतु -

(अ) तापमान -

➡ उत्तर से दक्षिण जाने पर इस के तापमान में वृद्धि होती है ।
➡ *भूमध्य रेखा व समुन्द्र से दूरी* तथा *समुन्द्र तल से ऊंचाई में वृद्धि से* उत्तरी भारत में भूमध्य रेखा से निकटता व समुंद्री प्रभाव से तापमान अधिक रहता है ।
➡ इस समय उत्तरीभारत में औसत तापमान *21 डिग्री सेंटीग्रेट* से कम व दक्षिणी भारत में अधिक रहता है ।

(ब) वायुदाब व पवनें -

➡ इस ऋतु में उच्च दाब *मध्य एशिया* तथा निम्न दाब *हिन्द महासगार* क्षेत्र में केंद्रित होता है ।
➡ इससे पवनें उच्च दाब से निम्न दाब की ओर चलने लगती है जिसे *उत्तरी - पूर्वी मानसूनी पवनें* कहा जाता है ।

(स) वर्षा -

➡ *भूमध्य सागरीय चक्रवातों* (पश्चिमी विक्षोभ) से होने वाली वर्षा *रबी की फसल* के लिए लाभदायक होती है । इसे स्थानीय भाषा में *" मावठ "* कहा जाता है ।

➡ *मावठ* की वर्षा *जम्मू कश्मीर , पंजाब , हरियाणा , राजस्थान , उत्तराखंड व उत्तरप्रदेश* में होती है ।
➡ *दक्षिण* में *उत्तरी - पूर्वी* मानसून से होने वाली वर्षा *तमिलनाडु* में होती है ।

2. ग्रीष्म ऋतु -

➡ उत्तरी भारत में ग्रीष्म ऋतु में तापमान अधिक होने के तीन प्रमुख कारण है -
1. सूर्य की किरणों का उत्तरी गोलार्द्ध में लम्बवत पड़ना
2. समुन्द्र से दूरी
3. प्रति चक्रवातों के कारण तापमान में वृद्धि ।

(अ) वायुदाब व पवनें -

➡ इस समय उत्तरी भारत में अत्यधिक गर्मी के कारण *निम्न वायुदाब* का क्षेत्र बन जाता है।
➡ इस समय *राजस्थान व पंजाब* में अति निम्न दाब हो जाता है । इसके विपरीत *हिन्द महासागर* क्षेत्र में *अधिक दाब* रहता है।
➡ इस ऋतु में उत्तरी भारत में पवनें चलती है , जिन्हें *" लू "* कहा जाता है ।
➡ उत्तर पूर्व भारत में इसे *नार्वेस्टर / चाय वर्षा* कहते है ।
➡ *पश्चिमी बंगाल* में इन आंधी तूफानों को *' काल बैशाखी '* कहते है ।

(ब) वर्षा -

➡ इस ऋतु में वर्षा बहुत *कम मात्रा* में होती है ।
➡ *दक्षिणी भारत* में *मालाबार तट* के पास होने वाली वर्षा को *" आम्र वर्षा "* तथा *कहवा* उत्पादन वाले क्षेत्रों (कर्नाटक) की वर्षा को *" फूलों की बौछार / चैरी ब्लास्म "* कहते है ।

3. वर्षा ऋतु -

(अ) तापमान -

➡ मानसूनी वर्षा में वृद्धि के साथ - साथ तापमान में कमी आने लगती है ।

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

(ब) वायुदाब व पवनें -

➡ इस समय *निम्न वायुदाब* (जिसे ' मानसून गर्त ' भी कहते है) राजस्थान व पंजाब में , व *उच्च वायुदाब* हिन्द महासागर में केंद्रित हो जाता है । जिससे हवाओं की दिशा दक्षिण - पश्चिम से बनने के कारण यह *दक्षिणी - पश्चिमी मानसून* के नाम से जाना जाता है।

(स) वर्षा -

➡ दक्षिण पश्चिमी मानसून *दक्षिण प्रायद्वीप* की स्थिति के कारण दो शाखाओं में बंट कर देश में वर्षा करता है : -

***1.* अरब सागरीय शाखा**

***2.* बंगाल की खाड़ी की शाखा**

➡ जब मानसून स्थल भाग में प्रवेश करता है तो प्रचंड गर्जन एवं तड़ित के साथ घनघोर वर्षा करती है । जिनको *मानसून का फटना या टूटना कहते है ।*

4. शरद ऋतु -

➡ यह ऋतु मानसून लौटने का काल है ।

➡ सूर्य के *दक्षिणी गोलार्द्ध* में जाने से तापमान में कमी आ जाती है ।

भारत में मानसून की उत्पत्ति तथा क्रियाविधि के सिद्धांत

1. चिर सम्मत सिद्धान्त / परम्परागत सिद्धान्त : -

➡ यह सिद्धांत 1686 ई. में *एडमण्ड होली* द्वारा दिया गया ।

➡ इन्होंने भारतीय मानसूनी पवनें *जल समीर* तथा *थल समीर* के रूप में चलती है ।

2. ITCZ संकल्पना (Inter Tropical Conversation zone) / अंतर उष्ण अभिसरण क्षेत्र : -

➡ *फ्लोन ने 1951 में* इस तापीय संकल्पना का प्रतिपादन किया ।

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

➡ *फ्लोन* ने बताया कि *सूर्य की उपस्थिति के कारण* भू मध्य रेखीय क्षेत्र में विकसित *निम्न दाब की स्थिति* व्यापारिक पवनों को अपनी ओर आकर्षित करती है , इस क्षेत्र को *ITCZ* कहा जाता है ।

3. जेट सिद्धान्त : -

➡ यह सिद्धांत भारतीय जलवायुवेता *पी. कोटेश्वरम* ने प्रतिपादन किया ।

4. अन्तः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण परिकल्पना : -

➡ जर्मन मौसम विज्ञान शास्त्री *फ्लोन* के अनुसार *भूमध्यरेखीय निम्न दाब की ओर चलने वाली दोनों व्यापारिक पवनें से मिलने से वाताग्र* उत्पन्न हो जाता है । *यही वाताग्र मानसून की जननी है ।*

🔹 *5. ब्लादिमीर कोपेन* ने *1936* में *वनस्पति के आधार पर* संसार की जलवायु का संशोधित वर्गीकरण प्रस्तुत किया ।
➡ डॉ कोपेन ने 1918 में भारत की जलवायु को *तीन* क्षेत्रो मे बांटा - *(1) शुष्क भारत , (2) अर्द्ध - शुष्क भारत , (3) आर्द्र भारत ।*

🔹 *कोपेन के अनुसार भारत के जलवायु प्रदेश*🔹

➡ कोपेन ने भारत को *8 जलवायु प्रदेशों* में बांटा है , जिसका वर्गीकरण निम्न है : -

A = उष्ण + आर्द्र
B = उष्ण + शुष्क
C = उष्ण + शीत
D = शीत + आर्द्र
E = शीत + शुष्क
f = वर्षभर वर्षा
w = सर्दियों में सूखा
s = गर्मियों में सूखा

h = हॉट (गर्मी)
c = ठंडा (Cold)
m = मानसून
g = वर्षा पहले गर्मी
W = शुष्क मरुस्थलीय
S = स्टेपी जलवायु (अर्द्धशुष्क)

1. As : - उष्णार्द्ध जलवायु का वह क्षेत्र जहाँ *ग्रीष्मकाल शुष्क* रहता है । *जैसे -* तमिलनाडु का कोरोमंडल तट ।

2. Aw : - उष्णार्द्ध जलवायु का वह क्षेत्र जहाँ *शीतकाल शुष्क* रहता है । *जैसे -* दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश ।

3. Amw : - उष्णार्द्ध जलवायु का *शीत शुष्क वाला मानसून प्रभावित क्षेत्र* । *जैसे -* केरल का मालाबार तट ।

4. BWhw : - उष्ण जलवायु का *गर्म रेतीला मरुस्थलीय* भाग जहाँ *शीतकाल शुष्क* रहता है । *जैसे -* राजस्थान का पश्चिमी रेतीला मैदानी प्रदेश ।

5. BShw : - उष्ण शुष्क जलवायु का प्रदेश जहाँ *सवाना तुल्य वनस्पति पाई* जाती है । उष्ण एवं शीत शुष्क का यह प्रदेश *अर्द्धशुष्क जलवायु* से संबंधित है । इसके अंतर्गत *पंजाब , हरियाणा , पश्चिमी उत्तर प्रदेश , गुजरात , पूर्वी राजस्थान* आदि शामिल है ।

6. Cwg : - शीतोष्ण जलवायु का वह प्रदेश जहाँ *शीतकाल शुष्क एवं वर्षा ऋतु उमस भरी* होती है । इसके अंतर्गत *गंगा के मैदानी सहित उत्तर का विशाल मैदान* शामिल है ।

7. Dfc : - शीत आर्द्ध जलवायु के इस प्रदेश में *वर्षा की स्थिति हमेशा बनी* रहती है । इसके अंतर्गत *उत्तरी पूर्वी भारत के अरुणाचल प्रदेश* और *असम का कुछ क्षेत्र* शामिल है ।

8. E : - ध्रुवीय जलवायु के इस क्षेत्र में *सदा बर्फ जमी* रहती है । *तापमान की न्यूनता और वर्षा का अभाव* मुख्य लक्षण है । इसके अंतर्गत *जम्मू कश्मीर , हिमाचल प्रदेश , उत्तराखंड , सिक्किम* और *अरुणाचल प्रदेश* का *उच्च पर्वतीय बर्फीला* क्षेत्र शामिल है ।

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

भारत में वर्षा का वितरण

➡ वर्षा के क्षेत्रीय वितरण के आधार पर देश को *चार भागों* में बांटा जा सकता है -

(1) अधिक वर्षा वाले भाग : -

➡ इसमें *असम , मेघालय , अरुणाचल प्रदेश , त्रिपुरा . . . .* आदि शामिल है ।
➡ यहां पर *200 सेंटी मीटर* से अधिक वर्षा प्राप्त होती है ।
➡ अधिक वर्षा के कारण यहां *उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन* पाये जाते हैं ।

(2) साधारण वर्षा वाले भाग : -

➡ इसके अंतर्गत *पश्चिमी घाट के पूर्वोत्तर ढाल , पश्चिमी बंगाल , छत्तीसगढ़ , झारखण्ड ....* आदि शामिल है ।
➡ यहां वर्षा *100 - 200 सेंटीमीटर* के मध्य होती है ।
➡ यहां पर *मानसूनी वन* पाए जाते है ।

(3) न्यून वर्षा वाले भाग : -

➡ इसके अंतर्गत *दक्षिणी प्रायद्वीप का आतंरिक भाग , मध्य प्रदेश , पूर्वी राजस्थान , पंजाब , हरियाणा . . .* आदि शामिल है ।
➡ इस भाग में वर्षा *50 -100 सेंटीमीटर* के मध्य होती है ।

(4) अपर्याप्त वर्षा वाले भाग : -

➡ इस भाग पर *तमिलनाडु का रायलसीमा क्षेत्र , कच्छ , पश्चिमी राजस्थान , पश्चिमी पंजाब व लद्दाख* आदि शामिल है ।
➡ यहां पर वर्षा *50 सेंटीमीटर* से भी कम वर्षा होती है ।

भारत की प्राकृतिक वनस्पति एवं मिट्टियां

http://GkToday.co.in http://ReetExam.net

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

Check your preparation at http://ExamPortal.co.in
Download our Android app at goo.gl/M8FSZ0

प्राकृतिक वनस्पति : एक नजर से

➡वनस्पति से तात्पर्य *पादप वर्गों के समूह* से है । जो *जैव पारिस्थिकीय तंत्र* का निर्माण करता है ।
➡भारत की *राष्ट्रीय वन नीति* के अनुसार भौगोलिक क्षेत्रफल के *33 प्रतिशत भाग* पर वन होना अनिवार्य है ।

वनों के प्रकार व वितरण

1. सदाबहार वन -

➡ ये वन देश के उन भागों में मिलते हैं , जहां औसत वर्षा *200 से.मी.* से अधिक तथा वार्षिक औसत तापमान *24 डिग्री से.ग्रे.* के लगभग रहती है ।
➡ इसके *तीन* प्रमुख क्षेत्र है -
1. पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल
2. अंडमान - निकोबार द्वीप समूह
3. उत्तरी - पूर्वी भारत में बंगाल , असम , मेघालय और तराई प्रदेश ।
➡ सदाबहार वनों में *रबर , महोगनी , एबोनी , लौह - काष्ठ , जंगली आम , ताड़* आदि वृक्ष व बांस तथा कई प्रकार की लताएं पायी जाती है ।
➡ इस प्रकार जे वनों की *ऊंचाई 30 - 45 मीटर* तक होती है ।
➡ सदाबहार वनों की सघनता इतनी अधिक होती है कि धरातल पर *सूर्य का प्रकाश* नही पहुंच पाता ।
➡ इस प्रकार के वृक्षो का *शोषण कम* होता है क्योंकि इनकी *लकड़ी कठोर व न बिकाऊ होने के कारण आर्थिक दृष्टि से ज्यादा उपयोगी नही* होती है।
➡ उत्तरी सहाद्रि प्रदेश में इन वनों को *' शोला वन '* के नाम से जाना जाता है ।

2. पतझड़ी / पर्णपाती / मानसूनी वन -

➡ ऐसे वन उन भागो में पाए जाते हैं , जहां *100 -200 से.मी.* तक औसत वार्षिक वर्षा होती है ।
➡ इनकी *ऊंचाई 25 - 35 मीटर* होती है ।

Register for free online Exam Practice at http://examportal.co.in/exam/main/register

➡ इन वनों के प्रमुख वृक्ष *साल ,सागवान , नीम, चन्दन* (सर्वाधिक कर्नाटक में) *, रोजवुड , आंवला , शहतूत , एबोनी , आम , शीशम , बांस* आदि है ।
➡ ये वन *उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र के निचले भाग , विंध्याचल व सतपुड़ा पर्वत , छोटा नागपुर व असम की पहाड़ियां , पूर्वी घाट के दक्षिणी भाग एवं पश्चिमी घाट का पूर्वी क्षेत्र* में पाये जाते है ।
➡ इनकी लकड़ी कठोर नही होती है ये वन *आर्थिक दृष्टि से अधिक उपयोगी* होते है ।
➡ अधिक दोहन के कारण इन वनों का क्षेत्र *दिन - प्रतिदिन घटता* जा रहा है ।

3. उष्ण कटिबंधीय शुष्क वन -

➡ ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं , जहां वर्षा का औसत *50 - 100 से.मी.* तक होता है ।
➡ इन क्षेत्रों में *जल की कमी सहन करने वाले वृक्षों* की बहुतायता मिलती है ।
➡ इन वनों की *जड़े लंबी व मोटी* होती है ।
➡ ये वन मुख्यत *दक्षिणी - पश्चिमी पंजाब , हरियाणा , पूर्वी राजस्थान व दक्षिणी - पश्चिमी उत्तर प्रदेश* में पाए जाते है ।
➡ इन वनों के प्रमुख वृक्ष *कीकर , बबूल , नीम , आम , महुआ , करील , खेजड़ी* आदि है ।
➡ इन वनों की *ऊंचाई 6 - 9 मीटर* होती है ।
➡ इनका उपयोग केवल *स्थानीय महत्व* के लिए किया जाता है ।

4. मरुस्थलीय वन -

➡ ये वन *50 से.मी.* से कम वर्षा वाले भागों में पाए जाते है ।
➡ यहाँ के वृक्षों में *पत्तियां कम , छोटी तथा काँटेदार* होती है ।
➡ *बबूल* यहां बहुतायत में मिलते है तथा *नागफनी , रामबांस , खेजड़ी ,खैर , खजूर* आदि भी यहां की प्रमुख वनस्पति है ।
➡ ये वन मुख्यत *दक्षिणी - पश्चिमी पंजाब , पश्चिमी राजस्थान , गुजरात , मध्य प्रदेश* आदि राज्यों में पायी जाती है ।
➡ इनका उपयोग भी *स्थानीय महत्व* के लिए किया जाता है ।

5. ज्वारीय / डेल्टाई / मैनग्रोव वन -

➡ इन्हें *दलदली वन* भी कहा जाता है ।

➡ ये वन *महानदी , गोदावरी , कृष्णा , कावेरी* आदि प्रायद्वीपीय नदियों के मुहानों पर तथा *गंगा - ब्रह्मपुत्र के डेल्टाई* (*सुन्दरी वृक्ष* के कारण इन्हें *सुंदरवन डेल्टा* भी कहते है) भागों में पाए जाते है ।
➡ इन क्षेत्रों में *बांस , नारियल , ताड़ , हैरोटीरिया , राइजोफोरा , सोनेरेशिया* आदि वृक्ष पाए जाते है ।
➡ ज्वारीय वन *समुंद्री कटाव* को रोकते हैं एवं इनकी लकड़ियाँ *मुलायम* होती है ।

6. पर्वतीय / शोलास वन -

➡ इस प्रकार के वन *दक्षिणी भारत में महाराष्ट्र के महाबलेश्वर* तथा *मध्य प्रदेश के पचमढ़ी* आदि ऊंचे भागो में *1500 मीटर* की ऊंचाई पर पाए जाते हैं ।
➡ पर्वतीय वनों की *ऊंचाई 15 - 18 मीटर* होती है ।
➡ वृक्ष *मोटे तने* वाले होते है , जिनके नीचे *सघन झाड़ियां* मिलती है ।
➡ अधिक ऊंचे भागों में *यूजेनिया , मिचेलिया व रोडेनड्रान्स* आदि वृक्ष मिलते है ।
➡ *1000 -2000 मीटर* की ऊंचाई पर चौड़ी पत्ती वाले *ओक तथा चेस्तनत , 1500 -3000 मीटर* की ऊंचाई पर *शंकुधारी वृक्ष जैसे देवदार , स्प्रूस , चीर* आदि तथा *3500 मीटर* से अधिक ऊंचाई पर *अल्पाइन वनस्पति जैसे सिल्वर फर , बर्च ,जूनिपर* आदि पाए जाते है ।

🔲 *ध्यातव्य रहे - मैंग्रोव वन या कच्छ वन* भारत के वे वन होते हैं , जो *तटीय क्षेत्रों के लवणीय जल* में पाए जाते है ।
🔲 *' वन स्थिति रिपोर्ट , 2005 '* के अनुसार भारत में कुल मैंग्रोव वन *4445 वर्ग किमी.* है । यह कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के *0.14%* के बराबर है ।

राष्ट्रीय वन नीति

➡ वनों की अनियंत्रित कटाई से *मिट्टी अपरदन , मरुस्थल का प्रसार , बाढों का आना , बंजर भूमि का बढ़ना , जलवायु की विषमता , सूखा , भूमिगत जलस्तर में गिरावट , वन्य जीवों की कमी तथा पर्यावरण प्रदूषण* आदि पर प्रतिकुल प्रभाव पड़े हैं ।
➡ भारत में सबसे पहले *1894 ई.* में *वन नीति* अपनाई गई थी ।
➡ स्वतंत्रता के बाद *31 मई 1954* को घोषित नई वन नीति के अनुसार भूमि के *33%* (मैदानी भागों में 20% तथा पर्वतीय क्षेत्रों में 60%) भाग पर वन होने चाहिए ।

➡ हमारे देश में *1988* में नवीन वन नीति घोषित की गई । उसके *तीन लक्ष्य* बताए गए -

1. पर्यावरण स्थिरता
2. वनस्पति व जीव जंतुओ जैसी प्राकृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखना
*3.*जन सामान्य की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति ।

➡ *भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट -* 2013 के अनुसार *8 जुलाई , 2014* को भारतीय वनों से सम्बधित *तेरहवीं* (13) *रिपोर्ट* जारी की गई , जिसका संदर्भ वर्ष *2013* है ,जो *रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट रिसोर्स सेट प्रथम से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर बनाई गई* , जिसके मुख्य बिंदु निम्न है : -
 भारत के कुल वनावरण *21.33%* भाग पर है , जबकि *वृक्षावरण व वनावरण* सम्मिलित रूप से *24.01%* भाग पर है , जिसे *33.33% भाग* होना चाहिए ।

 ISER - 2011 की तुलना में देश में लगभग *6300 किमी. / 23.81%* वन बढ़े हैं ।

 क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक वन वाले राज्य - मध्य प्रदेश (प्रथम) , अरुणाचल प्रदेश , छतीसगढ़ महाराष्ट्र तथा उड़ीसा ।

 कुल वनावरण व वृक्षावरण क्षेत्रफल वाले राज्य - मध्य प्रदेश (प्रथम) , अरुणाचल प्रदेश , महाराष्ट्र , छतीसगढ़ तथा उड़ीसा ।

 भौगोलिक क्षेत्रफल के प्रतिशत के आधार पर सघनता - मिजोरम (प्रथम) , अरुणाचल प्रदेश , नागालैंड , मेघालय तथा मणिपुर ।

 भारत में सर्वाधिक नगरीय वृक्षावरण क्षेत्रफल वाले राज्य - तमिलनाडु (प्रथम) , महाराष्ट्र , कर्नाटक , केरल तथा गुजरात ।

 भारत में न्यूनतम वन क्षेत्र - पंजाब में तथा न्यूनतम नगरीय वृक्षावरण *सिक्किम* में है ।

 वन क्षेत्रों के विस्तार व मरुस्थल के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए *वन अनुसंधान केंद्र ' देहरादून '* तथा *केंद्रीय मरू वन क्षेत्र अनुसंधान ' जोधपुर '* की स्थापना की गई है ।

 वानिकी , अरावली वृक्षारोपण व वन संरक्षण कार्यक्रम पर *पंडित पुरस्कार , वृक्ष मित्र पुरस्कार* प्रदान किये जाते है ।

प्रकृति के महत्वपूर्ण दिवस

 2015 में भारत सरकार ने *नदी संरक्षण वर्ष* तथा *UNO* ने *अंतर्राष्ट्रीय मृदा* वर्ष के रूप में मनाया है ।
 सन 2010 से 2020 को UNO द्वारा *अंतर्राष्ट्रीय मरुस्थलीकरण* के विरुद्ध दशक घोषित किया है ।
 भारत में *22 मई* को *अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस* जे रूप में मनाया जाता है ।
 18 अप्रेल को *विश्व विरासत दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 22 मार्च को *विश्व जल दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 3 मार्च को *विश्व वन्य जीव दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 8 जून को *विश्व महासागर दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 29 जुलाई को *अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 14 फरवरी को *राष्ट्रीय बाघ दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 16 सितम्बर को *अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 9 सितम्बर को *हिमालय दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 4 अक्टूबर को *विश्व पशु दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 17 जून को *विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस* के रूप में मनाया जाता है ।
 1 - 7 अक्टूबर को *वन्य प्राणी सप्ताह* के रूप में मनाया जाता है ।

भारत में वन्य जीव

➡ भारत में प्राणियों की लगभग *75,000* प्रजातियां पायी जाती है ।
➡ उनमे *350 स्तनधारी ,1,313 पक्षी , 408 सरीसृप , 197 उभयचर , 2,546 मछलियां , 50,000 कीट , 4,000 मोलस्क* तथा अन्य बिना रीढ़ वाले प्राणी है । यह विश्व का कुल *13%* है ।

➡ स्तनधारी जानवरों में *हाथी* सबसे अधिक महत्वपूर्ण है । ये *असम ,कर्नाटक और केरल* के *उष्ण* तथा *आर्द्र वनों* में पाए जाते है ।
➡ *एक सिंग वाले गैंडे* पश्चिमी बंगाल तथा असम के दलदली क्षेत्रों में रहते है ।
➡ *कच्छ के रन* तथा *थार मरुस्थल* में *जंगली गधे* तथा *ऊँट* रहते है ।
➡ भारत *विश्व का अकेला देश है* जहाँ *शेर तथा बाघ* दोनों पाए जाते है ।
➡ *भारतीय शेरों*का प्राकृतिक वास स्थल *गुजरात में गिर जंगल* है ।
➡ *बाघ मध्य प्रदेश* तथा *झारखण्ड* के वनों , *पश्चिमी बंगाल* के *सुंदरवन* तथा *हिमालयी क्षेत्रों* में पाए जाते है ।
➡ *तेंदुआ* बिल्ली जाति का सदस्य है जो *शिकारी जानवरों* में मुख्य है ।
➡ *लद्दाख* की बर्फीली ऊंचाईयों में *याक* पाए जाते है जो *गुच्छेदार सींगों वाला बैल* जैसा जीव है जिसका *भार लगभग एक टन* होता है ।
➡ *तिब्बतीय बारहसिंघा , भारल* (नीली भेड़) , *जंगली भेड़* , तथा *किआंग* (तिब्बती जंगली गधे) भी भारत में पाए जाते है ।
➡ *घड़ियाल , मगरमच्छ* की प्रजाति का एक ऐसा प्रतिनिधि भी है जो *विश्व में केवल भारत* में पाया जाता है ।

वन्य जीव संरक्षण

➡ भारत के *सम्राट अशोक महान* के शिलालेखों में वन्य जीवों के शिकार पर अंकुश व संरक्षण के बारे में विवरण मिलता है ।

**** *जैव मंडलीय सुरक्षित क्षेत्र -*****
➡ हमारे देश में वन्य जीवों के संरक्षण हेतु *15 जीव मंडल निकाय* (आरक्षित क्षेत्र) स्थापित किये गए है । ये निम्न है -
➡ *नन्दादेवी* (उत्तराखण्ड)
➡ *सुंदरवन* (पश्चिमी बंगाल , रॉयल बंगाल टाइगर)
➡ *मानस* (असम)
➡ *नोकरेक* (लाल पांडा , मेघालय)
➡ *मन्नार खाड़ी* (तमिलनाडु)
➡ *नीलगिरि : -* तमिलनाडु , केरल , कर्नाटक में फैला यह क्षेत्र , *1986 में जैव आरक्षित क्षेत्र घोषित* किया गया । यह *देश का सबसे पुराना जैव आरक्षित क्षेत्र* है । भारत में *सर्वाधिक जैव विविधता*रखने वाला *केरल का साइलैंड वैली* भी इसी क्षेत्र में स्थित है ।

➡ *सिमलीपाल* (उड़ीसा)
➡ *नामदफा*
➡ *थार का रेगिस्तान*
➡ *जिम कार्बेट* ,उत्तराखंड
➡ *कच्छ का छोटा रन : -* गुजरात (क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा क्षेत्र)
➡ *कान्हा*, मध्यप्रदेश
➡ *उत्तरी अंडमान*
➡ *वृहद निकोबार*व
➡ *काजीरंगा* , असम में

 यूनेस्को ने भारत के *10 जैव मंडल रिजर्वों को विश्व धरोहर घोषित* किया है : -
1. नीलगिरि (2000 ई.)
2. मन्नार की खाड़ी (2001 ई.)
3. सुंदर वन (2001 ई.)
4. नन्दादेवी (2004 ई.)
5. नोकरेक (2009 ई.)
6. पंचमढ़ी (2009 ई.)
7. सिमलीपाल (2009 ई.)
8. अचानकमार - अमरकंटक (2012 ई.)
9. निकोबार द्वीप समूह (2013 ई.)
10. अगस्तमलाई (2015 -2016 ई.)

 2010 में भारत सरकार ने *हाथी* को *राष्ट्रीय विरासत पशु* घोषित किया था ।
➡ छतीसगढ़ के *बादलखोड़ , लेमारू* में जबकि अरुणाचल प्रदेश के *देवमाली* में भारत सरकार ने *हाथी परियोजना* बना रखी है ।

 घड़ियालों के संरक्षण हेतु *राजस्थान , मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश* की *सयुक्त राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल परियोजना* तथा उड़ीसा की *भितरकनिका घड़ियाल परियोजना* संचालित है।

 उड़ीसा के तट पर *श्री विश्वजीत मोंहती* के नेतृत्व में लुप्त प्राय *औलिव रिडले टर्टल* के संरक्षण हेतु *' प्रोजेक्ट कच्छप '* चलाया जा रहा है ।

 1950 में देश के तत्कालीन *वन मंत्री के.एम. मुंशी* द्वारा चलाये गये *' अधिक वृक्ष लगाओं '* अभियान को ही वर्तमान में *प्रत्येक वर्ष 1 -7 जुलाई के मध्य वन महोत्सव* जे नाम से मनाया जाता है ।

 1948 में स्विट्जरलैंड के *ग्लैण्ड शहर* में *IUCN* का गठन किया गया , जिसके द्वारा *1966* से *रेड डाटा बुक* प्रकाशित की जाती है , जिसमे *सजीवों की विलुप्त* और *संकटग्रस्त प्रजातियो* का उल्लेख किया गया है ।* यूनेस्को* ने भारत के *सात भौगोलिक* एवं *पारिस्थितिकीय* क्षेत्रों को *विश्व विरासत* की सूची में शामिल किया है : -

1. काजीरंगा (असम)
2. मानस (असम)
3. नन्दादेवी (उत्तराखण्ड)
4. सुन्दर वन (पश्चिमी बंगाल)
5. केवलादेव (भरतपुर)
6. फूलों की घाटी (उत्तराखंड)
7. भितरकनिका (उड़ीसा)

भारत की मिट्टियां

मिट्टियां : एक नजर

✍✍✍✍✍✍✍✍

➡ हमारे देश में *70%* से अधिक लोग अपनी आजीविका के लिए *कृषि* पर आधारित है ।
➡ मृदा भूमि की वह परत है , जो चटटानों के *विखण्डन , विघटन और जीवांशों* के सड़ने गलने से मिलकर बनती है ।
➡ इसका निर्माण व गुण *चटटानों , जलवायु , वनस्पति और समय* पर निर्भर करता है ।
➡ *रचना विधि* के अनुसार मिट्टी के *दो* प्रकार है : -

1. स्थानीय मिट्टी -

ऋतु क्रिया के प्रभाव से विखण्डित चटटाने जब अपने मूल स्थान से नही हटती या बहुत कम हटती है , तो इस प्रकार निर्मित मिट्टी को *स्थानीय मिट्टी* कहा जाता है ।

➡ ऐसी चट्टानी मिट्टी *कंकरीली , मोटे कणों वाली , लाल रंग की और अनुपजाऊ* होती है । तथा जहां लावा के विघटन से मिट्टी का निर्माण होता है , वहां मिट्टी *काली और उपजाऊ* होती है ।

***2. विस्थापित मिट्टी –**

नदी , हिमनद , पवन* आदि के प्रभाव से विखण्डित चटटानों से बनी मिट्टी जब अपने मूल स्थान से हटकर दूर चली जाती है , तो इस तरह से निर्मित मिट्टी को *विस्थापित मिट्टी* कहा जाता है ।

➡ भारत में *मध्यवर्ती मैदानों तथा तटीय मैदानों* में ऐसी मिट्टियां पायी जाती है ।

➡ ये मिट्टी बहुत ही *उपजाऊ* होती है ।

भारतीय मिट्टियों के प्रकार -

1. जलोढ़ / कांप / कछारी मृदा

✍✍✍✍✍✍✍✍✍✍

➡ भारत के *विशाल मैदान व तटीय मैदान* कांप मृदा पायी जाती है ।

➡ ये मृदा *नदियों* द्वारा लाई गई *उपजाऊ* मृदा है ।

➡ यह मिट्टी लगभग *8 लाख वर्ग किमी.* में फैली है ।

➡भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार इसे *तीन* भागों में बांटा गया है : -

 1. पुरातन / बांगर कांप मिट्टी - यह मिटटी *ऊंचे भागों में जहां बाढ़ का पानी नही पहुंच पाता* है , पायी जाती है।

➡ इसमें गहन कृषि करके वर्ष में *दो फसलें* उत्पन्न की जाती है ।

➡ इनमे *सिंचाई की आवश्यकता अधिक* होती है ।

 ***2. नूतन / खादर कांप मिट्टी –**

जहां नदियों के *बाढ का पानी पहुंच पाता है ,* वहां नूतन मिट्टी पायी जाती है ।

➡ क्योकि प्रतिवर्ष नदियों द्वारा लायी हुई मिट्टी की *नई परत* जमा होती रहती है ।इसे *खादर* भी कहते है ।

➡ ये मिट्टी काफी *उपजाऊ* होती है । इसने *सिंचाई की आवश्यकता* नही पड़ती है ।

 3. नूतनतम कांप मृदा - यह मिट्टी *गंगा , ब्रह्मपुत्र के डेल्टा प्रदेश* में पायी जाती है ।

➡ इसमें *चूना , मैग्नीशियम , पोटाश , फॉस्फोरस तथा जीवांश* की अधिकता होती है , जिससे कृषि के लिए यह मिट्टी *बहुत उपयोगी* होती है ।
➡ कांप मिट्टी का क्षेत्र *समतल* होते है । जिन पर *नहरें निकलना , कुएँ खोदना तथा खेती करना सुगम* होता है ।
➡ कांप मिटटी में *नमी अधिक समय* तक रहती है ।
➡ यह *बारीक कण वाली भूर - भूरी* मिट्टी होती है ।

2. काली / लावा / वर्टिसोल्स मृदा

✍✍✍✍✍✍✍✍✍✍
➡ यह मिट्टी *दक्षिणी भारत के लावा प्रदेश* (महाराष्ट्र , मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग , आंध्र प्रदेश के पश्चिमी भाग व कर्नाटक के उत्तरी भग , गुजरात व दक्षिणी - पूर्वी राजस्थान) में पायी जाती है ।
➡ भारत के लगभग *5 लाख वर्ग किमी.* क्षेत्र में इसका विस्तार है ।
➡इस मिट्टी की विशेषता यह है कि इसमें *आर्द्रता बनाये रखने की अपूर्व क्षमता* होती है ।
➡ इस मिट्टी में *लोहा व एल्युमिनियम* खनिजों का अंश अधिक पाया जाता है ।
➡ *पोटाश एवं चूने* जा अंश अधिक होता है किंतु *फॉस्फोरस* की मात्रा कम होती है ।
➡ यह मृदा *कपास* की कृषि के लिए बहुत उपयुक्त है । इसलिए इसे *कपास की काली मृदा* भी कहते हैं ।
➡ काली मिट्टी को *' रेगर '* भी कहा जाता है
➡ सूखने पर यह मिट्टी *कड़ी / कठोर* हो जाती है एवं इसमें दरारें पड़ जाती है ।
➡ *नर्मदा , ताप्ती , गोदावरी और कृष्णा नदीयों* की घाटियों में इसकी *परतें 7 मीटर तक गहरी* मिलती है ।

3. लाल मृदा -

✍✍✍✍✍
➡ इस मिट्टी की मुख्य विशेषता यह है कि यह *छिद्रदार* होती है ।
➡ इसमें *सिंचाई की आवश्यकता पड़ती* है , क्योकि इसमें *आर्द्रता* बनाये रखने की क्षमता नही होती है ।
➡ यह मिट्टी उपजाऊ नही होती है ।
इसका रंग *भूरा व लाल* होता है क्योंकि इसमें *लोहे* का अंश अधिक रहता है । इसमें *कंकड़* भी पाए जाते हैं ।

➡ यह मिट्टी *छतीसगढ़ , छोटा नागपुर , उड़ीसा , आंध्र प्रदेश , तमिलनाडु और कर्नाटक* (प्रायद्वीपीय पठार में) में मुख्य रूप से मिलती है ।
➡ इसमें *चूने* का प्रयोग कर इसकी *उर्वरता शक्ति को बढ़ाया* जा सकता है ।

4. लैटेराइट मृदा -

✍✍✍✍✍✍
➡ यह *पक्की ईंट जैसी लाल रंग की* होती है , जिसमें *कंकडों* की प्रधानता रहती है ।
➡ यह *पुरानी चटटानों के विखण्डन* से बनी होती है ।
➡ इसमें *लोहा और एल्युमिनियम* की मात्रा अधिक रहती है , किंतु *चूना , फॉस्फोरस , नाइट्रोजन , पोटाश और जीवांश* की कमी रहती है ।
➡ यह मृदा *अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों* में मिलती है साथ ही तापमान भी अधिक रहता है ।
➡ यह *मानसूनी जलवायु की विशिष्ट मृदा* है ।
➡ इस मृदा के उपजाऊ तत्व जल के साथ घुलकर जमीन में नीचे चले जाते है जिसे *' निक्षालन '* कहते है ।
➡ यह मिट्टी *चाय की कृषि व काजू के पेड़ों* के लिए लाभदायक है ।
➡ यह मृदा *पूर्वी घाट के किनारें से राजमहल पहाड़ी* और *पश्चिमी बंगाल* होते हुए *असम* तक *संकड़ी पट्टी के रूप में* पायी जाती है ।

5. मरुस्थलीय / रेतली / बलुई मिटटी -

✍✍✍✍✍✍✍✍✍
➡ यह मिट्टी *पश्चिमी राजस्थान , सौराष्ट्र व कच्छ* की मरूभूमि पाई जाती है ।
➡ इसमें *क्षारीय तत्वों* की अधिकता होती है , किंतु *नाइट्रोजन , ह्यूमस* तत्वों की कमी रहती है ।
➡ *शुष्क व रंध्रमय* होने के कारण *पवनों के द्वारा स्थानान्तरित* होती रहती है ।

6. पर्वतीय मृदा -

✍✍✍✍✍✍
➡ यह मृदा *हिमालय पर्वतीय* क्षेत्र में मिलती है ।
➡ अपरिपक्व होने के कारण यह मृदा *मोटे कणों वाली व कंकड़ - पत्थर* युक्त होती है । अतः इसे *अपरिपक्व मृदा* भी कहा जाता है ।
➡ यह मृदा *अम्लीय* प्रकार की होती है ।
➡यह मिट्टी *बागानी कृषि / चाय व आलू* की कृषि के लिए उपयुक्त होती है ।